* अथ *

तीर्थश्राद्ध-भाषा टीका

॥ प्रारभ्यते ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ तीर्थश्राद्ध प्रारम्भः । यहाँ स्मृति कहती है—आसन, पिण्डदान, प्रत्यवनेजन, दक्षिणा और अन्न का संकल्प इतने कार्यका विधान प्रत्येक तीर्थों में करना चाहिए ॥ १ ॥ श्राद्ध करने के लिए उद्यत हो जाने पर

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ तीर्थश्राद्धप्रारम्भः ॥ अत्र-स्मृतिः ॥ आसनं पिण्डदानं च पुनः प्रत्यवनेजनम् । दक्षिणा चान्नसंकल्पं सर्वतीर्थेष्वयं विधिः ॥ १ ॥ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थांगतोपिवा । यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ २ ॥ श्रीविष्णुः पुंडरीकाक्षः पुनातुइत्यनेन श्राद्धी-यवस्तूनि सिंचेत् आत्मानमपि सिंचेत् जलत्रिकुशैः ॥ ततः प्रार्थना करसंपुटीकृत्वा विष्णुं मनसाध्यात्वा प्रार्थयेत् पूर्व-

"ॐ अपवित्रः पवित्रो वा" इस मंत्रसे अपने ऊपर जल छिड़के ॥२॥ "श्रीविष्णु पुण्डरीकाक्षः पुनातु" इस मंत्र से त्रिकुशा लेकर श्राद्ध की सब सामग्रियों और अपने शरीर पर जलका छींटा दे। इसके अनन्तर पूर्व की ओर मुख करके बैठे।

और "नमो नमस्ते गोविन्द" इस मन्त्र से हाथ जोड़कर विष्णुभगवान् का ध्यान करे ॥ ॥ इसके बाद "ॐ तत्सद्य" से लेकर "चाहं करिष्ये" तक का मंत्र पढ़

मुखः, ॐ नमोनमस्ते गोविंदपुराण पुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतोदिशि ॥ ३ ॥ ततः तीर्थश्राद्धनिमित्त-संकल्पं कुर्यात् तद्यथा ॐ तत्सदद्यामुकमासेऽमुकपक्षेमुकतिथावमुकवासरेऽमुकतीर्थे ममआत्मनः समस्तपितृणां समुद्धारार्थं पितृणां मातृपितृगुरुस्वसृणामक्षयतृप्तिहेतवे समस्ततीर्थजन्य-फलप्राप्त्यर्थंपितृणां अक्षयतृप्त्यर्थं अमुकतीर्थे तीर्थश्राद्धं पिंडदानं चाहं करिष्ये ॥ ४ ॥ वेदीं निर्मायोत्तरत उच्चादक्षिण नम्रां पंचगव्येन सिंचेत् दक्षिणाभिमुखः पितरोपनीतिमपसव्यं

कर संकल्प करे ॥ ४ ॥ तदनन्तर उत्तर की ओर ऊँची और दक्षिण की तरफ नीची के क्रम से वेदी बनावे फिर दक्षिणाभिमुख बायाँ घुटना मोड़ कर और

अपसव्य होने के पश्चात् पंचगव्य से वेदी को सींचे। और तिल, सफेद सरसों, फूल, चन्दन आदि बिखेरें ॥ ५ ॥ इस के बाद "ओं अयोध्या मथुरामाया" इस मंत्र से वेदी पर त्रिकुशा का आसन बिछावे। कव्यवाडव, अनल, सोम, यम,

पातितवामजानुः तिलगौरसर्षपपुष्प चंदनानि विकिरेत् ॥५॥
वेदीं ततः द्विगुणभुग्नत्रिकुशरूपमासनानि द्वादशप्रत्येकं
स्थापयेत् अनेन मंत्रेण अयोध्यामथुरामायाकाशीकांची अवं-
तिका। पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायकाः ॥ १ ॥
ॐ कव्यवाडोनलः सोमः यमश्चैवार्यमास्तथा। अग्निष्वात्ता-
बर्हिषदः सोमपः पितरस्तथा इति ॥ ६ ॥ ततः आसनोपरि
तिलजलपुष्प गंधपात्रे कृत्वा अद्यामुकगोत्राणां ममपितृपिता-
मह प्रपितामहवृद्धप्रपितामहानां सपत्नीकानामासनोपरिअवने-

अर्यमा, अग्निष्वात्ता, वर्हिषद और सोमपा, इतने पितर माने जाते हैं ॥ ६ ॥ इस के अनन्तर आसन पर तिल, जल, पुष्प इनको चन्दन के पात्र में रख कर "अद्या-

मुकगोत्राणां" इस मंत्र से संकल्प कर अवनेजन प्रदान करे ॥ २७ ॥ इसी तरह उक्त मंत्र में "मातामह प्रमातामहवृद्ध प्रमातामहानां" आदि जोड़कर नाना आदि को भी अवनेजन प्रदान करे। यह अवनेजन देते समय आधाजल आसन पर गिरा

जनं अहं संप्रददे ॥ ७ ॥ एवं मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमाता-महानांसपत्नीकानां आसनोपरि अवनेजनमहं संप्रददे इत्यने-नासनोपरि पात्रस्थं जलमर्द्धं ददेत् अर्द्धं जलं अवशेषयेत् । ॥ ८ ॥ ॐ अद्यामुकगोत्रा स्मत्पिता अमुकनामातस्य अक्षय-तृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधुतिलजलादिप्रोक्षितं पिण्डं तस्मै स्वधा ॥ ९ ॥ अद्यामुकगोत्रास्मत्पिताअमुक नामातस्याक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं पिण्डं अमृतरूपं मधुतिलजलप्रोक्षितं तस्मै स्वधा ॥ १० ॥ अद्यामुकगोत्रा-

दे बाकी बचाले ॥ ८ ॥ "अद्यामुक गोत्रा" यह मंत्र पढ़ कर पिता का पिण्डदान देवे ॥ ९ ॥ फिर "अद्यामुक" यह मंत्र पढ़ कर पिता मह को पिण्ड प्रदान करे

॥ १० ॥ फिर "अद्यामुक" यह मंत्र पढ़ कर प्रपितामह को पिण्डदान दे ॥ ११ ॥
फिर "अद्यामुक" यह मंत्र पढ़कर वृद्ध प्रपितामह को पिण्ड प्रदान करे ॥ १२ ॥

स्मत्पितामहामुकनामा तस्य अक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं तिलमधुजलप्रोक्षितं पिण्डं तस्मै स्वधा ॥११॥
अद्यामुकगोत्रास्मद् वृद्धप्रपिता महाऽमुकनामा इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधुतिलजलप्रोक्षितं पिंडं तस्मै स्वधा ॥१२॥
अद्यामुकगोत्रायाः ममामातुः अमुकदेव्याः तस्याअक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधुतिलजलप्रोक्षितं पिंडं तस्यै स्वधा ॥ १३ ॥ अद्यामुकगोत्रायाः ममपितामही अमुकीनाम्नी देवी तस्याः अक्षय तृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं

"अद्यामुक गोत्रायाः" यह मंत्र पढ़ कर माता को पिण्ड देवे ॥१३॥ फिर "अद्यामुक गोत्राया." इस मंत्र से वृद्ध प्रपितामही को पिण्ड देवे ॥१४॥ फिर "अद्यामुक

गोत्राया:” इस मंत्र से प्रपितामही के लिए पिण्ड प्रदान करे ॥ १५ फिर “अद्या-
मक गोत्राया:” इस मंत्र से वृद्ध प्रपितामही को पिण्डदान देवे ॥ १६ ॥ फिर

अमृतरूपं मधुतिलजलप्रोक्षितं पिंडं तस्यैस्वधा ॥ १४ ॥
अद्यामुकगोत्रायाः ममप्रपितामही अमुकनाम्नीदेवी तस्या-
अक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधुतिलजल-
प्रोक्षितं पिंडं तस्यै स्वधा ॥ १५ ॥ अद्यामुकगोत्राअस्मद्-
वृद्धप्रपितामही अमुकनाम्नी तस्याअक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्या
न्नमयं अमृतरूपं मधुतिलजलादिप्रोक्षितं पिंडं तस्मै स्वधा ।
॥ १६ ॥ अद्यामुकगोत्रः द्वितीयगोत्रः अस्मन्मातामहा मुक-
नाम्नः तस्य अक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधु-
तिलजलादिप्रोक्षितं पिंडं तस्मै स्वधा । अद्यामुकगोत्राःद्वितीय

“अद्यामुक” मंत्र पढ़ता हुआ मातामह (नाना) को पिण्ड प्रदान करे । फिर

"अद्यामुक" मंत्र पढ़ता हुआ प्रमातामह को पिण्डदान दे। फिर "अद्यामुक" यह मंत्र पढ़ता हुआ वृद्ध प्रमातामह के लिए पिण्डदान दे ॥ १७ ॥ "अद्यामुक-

गोत्रः अस्मत्प्रमाता महा मुकनाम्नस्तस्य अक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधुतिलजलादिप्रोक्षितं पिंडं ते स्वधा अद्यामुकगोत्राः द्वितीयगोत्रः अस्मद्वृद्धप्रमातामहामुकनाम्नः तस्यअक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधुतिलजल प्रोक्षितं पिंडं ते स्वधा ॥ १७ ॥ अद्यामुकगोत्राद्वितीय-गोत्रा अस्मन्मातामही चामुकनाम्नी देवी तस्या अक्षय-तृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं अमृतरूपं मधुतिलजलादि प्रोक्षितं पिंडं तस्यै स्वधा अद्यामुकगोत्रा द्वितीयगोत्रा अस्मत्प्रमातामही अमुकनाम्नी देवी तस्याः अक्षय-

गोत्रा" इस मंत्र से मतामही को पिण्ड दान दे। फिर "अद्यामुक" यह मंत्र पढ़

कर प्रमातामही के नाम पिण्ड देवे "अद्यामुक" यह मंत्र पढ़कर वृद्ध प्रमातामही को पिण्डदान दे ॥१८॥ इसी प्रकार सबके नाम और गोत्र का उच्चारण करता हुआ पितृव्य । (चाचा) पितृव्य पत्नी (चाची) भांजा, बहिन, मामा, मौसी

तृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं मधुतिलजलादिप्रोक्षितं पिंडं तस्यै स्वधा। अस्मद्वृद्धप्रमातामही अमुकनाम्नी तस्या अक्षयतृप्त्यर्थं इदं हविष्यान्नमयं मधुतिलजलादिप्रोक्षितं पिंडं ते स्वधा ॥ १८ ॥ एवं पितृव्यं पितृव्यपत्नीं पितृस्वस्त्रीयं पितृस्वसृमातुलं मातुलानीम्, मातृस्वसृमातृस्वस्त्रीयम् भ्रातुः भ्रातृपत्नीनां नामगोत्रमुच्चारणंकृत्वापिंडंदद्यात् ॥ १९ ॥ आब्रह्मणोयेपितृवंशजाता मातुस्तथा वंश भवामदीयाः। वंशद्वये ये मम

मौसी का लड़का, भाई, भाभी आदि को पिण्ड देवे ॥१९॥ इसके अनन्तर "आ ब्राह्मणों ये पितृवंशजाता" इत्यादि मंत्रों को पढ़ता हुआ मंत्र में कहे हुए लोगों

को पिण्ड दान दे। मंत्र का अर्थ इस प्रकार है—ब्रह्मा की उत्पत्ति से लेकर जो लोग मेरे पिता के वंश में उत्पन्न हुए हों या माता के वंश में जनमे हो, इन दोनों वंशों में सेवक बन कर सेवा किए हो, या सेवकों की अधीनता में रह कर सुश्रूषा किए हों, ये लोग और मित्र, शिष्य, पशु वृक्ष, जिनको मैंने कभी कहीं देखा हो, जिन्हें

दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्चामित्राणि शिष्यापशवश्चवृक्षादृष्टाश्च स्पृष्टाश्च कृतोपकाराः। जन्मांतरेये मम संगताश्च तेषां स्वधापिंड महं ददामि १ ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तते पितरोमम। तेसर्वे तृप्तिमायांतु पिंडदानेनशाश्वतीम् २ ये बांधवा

छुआ हो, जिसने मेरा किसी प्रकार का उपकार कियाहो, इस जन्म के अतिरिक्त जन्मान्तर में जिन्हों ने मेरे साथ मित्रता की हो उन लोगों के लिए मैं यह स्वधा पिण्ड प्रदान कर रहा हूँ ॥ १ ॥ जो कोई मेरे पितर अब तक प्रेतरूप से रहते आए हों, वे सब मेरे इस पिण्डदान से सदा के लिए तृप्त होजायँ ॥ २ ॥ इस

जन्म में या दूसरे जन्म में उत्पन्न मेरे जो भाई बन्धु हैं, उनके लिए मैं यह पिण्ड प्रदान करता हूँ। यह उनको अक्षयभाव से प्राप्त होवे ॥ ३ ॥ मेरे पिता के या माता के वंशवाले जो लोग मर चुके हों, वे गुरु, श्वसुर, बंधु या और किसी

बांधवायेयेऽन्यजन्मनि बांधवाः। तेषां पिंडोमया दत्तो अक्षय्य मुपतिष्ठतु ३ पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबंधूनां ये चान्ये बांधवास्मृताः ४ येमे कुले लुप्तपिंडाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां पिंडोमयादत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठतु ५ ॥ २० ॥ ॐ अद्यामुकगोत्राणां मम पितापितामहप्रपितामह-

प्रकारके वान्धव हों, उनके लिए और मेरे कुल में जो लोग ऐसे हुए हों कि जिन के घर में कोई पिण्डा, पानी देने वाला न हो, स्त्री पुत्र भी न हुए हों, मैं उनके लिए भी पिण्डदान दे रहा हूँ! यह उन्हें अक्षयभाव से प्राप्त होवे ॥४॥५॥ इस के

अनन्तर " ॐ अद्यामुक" इस मंत्र को पढ़ता हुआ पिण्डों के ऊपर उस जल को छोड़ दे जो आधा डाल कर बाकी बचा लिया गया था ॥ २१ ॥ तदन्तर सब के नाम गोत्र का उच्चारण करता हुआ गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, पुंगी

वृद्धप्रपितामहानां तथा मातापितामही प्रपितामही वृद्धप्रपितामहीनां पिंडोपरिप्रत्यवनेजनं संप्रददे, इति एवं मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां पिंडोपरि प्रत्यवनेजनं संप्रददे इत्यनेन पिंडोपरि अर्घशेषं जलं दद्यात् ॥ २१ ॥ ततः पिंडपूजनं गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्यतांबूलपूंगीफल एलालवंग यज्ञोपवीतवस्त्रतुलसीदलादिकंदत्वा जलेन नाम-गोत्रोच्चारणंकृत्वा तर्पणंकुर्यात् ॥ २२ ॥ सर्वेषां पिंडोपरि

फल, इलायची, लौंग, यज्ञोपवीत, वस्त्र तथा तुलसी दल आदि देकर पूजन करने के पश्चात् तर्पण करे ॥ २२ ॥ जिन जिन लोगों को पिण्डदान दिया गया

हो उन्हीं उनके नाम तर्पण भी करना चाहिए। ऐसा करने के बाद सव्य होकर आचमन करें ॥ २३ ॥ इस जगह पर श्रुति का मत है—किसी प्रकार का वैदिक कार्य (यज्ञ आदि) करते समय यदि कुछ भूल चूक हो जाय या कुछ उल्टा-

तर्पणं विधेयम् येषां पिंडदानं कृतम् । ततः सव्यं कृत्वाचमनम् ॥ २३ ॥ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिः १ विष्णुस्मरणं करसंपुटीकृत्वा ॥ २४ ॥ सूर्याय अर्घ्यम् । एहि सूर्य्यसहस्रांशो तेजोराशिजगत्पते । अनुकंपय मां भक्त्या गृहा-

पलटा हो जाय तो यजमान को चाहिए कि विष्णुभगवान् का नाम लेले। ऐसा करने से वह पूर्ण हो जायगा ॥ १ ॥ अतएव विष्णुभगवान् का स्मरण कर के हाथ जोड़े ॥ २४ ॥ तत्पश्चात् "एहि सूर्य सहस्रांशो" इस मंत्र से सूर्यनारायण को

अर्घ्य देवे ॥ २५ ॥ अर्घ्य देने के वाद नमस्कार करे और अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मणों का पूजन करे, भोजन करावे और दक्षिणा दे। दक्षिणा दान का संकल्प

णार्घ्यं नमोस्तु ते १ ॥ २५ ॥ अर्घ्यं दत्वानमस्कारं च कृत्वा यथाशक्त्या ब्राह्मणपूजनं भोजनं दक्षिणादानं कुर्यात् ॐ अद्य कृतैतत्तीर्थश्राद्धसांगतासिद्ध्यर्थं अमुकतीर्थं मम समस्तपितॄणां अक्षयतृप्त्यर्थं आत्मनः सह सर्वेषामुद्धारणार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं इदं रजतं चन्द्रदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणाकर्तव्यताकं चतुर्भ्यमहं संप्रददे स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ २६ ॥ नमोवः ततोऽभिगम्यतामिति

" ॐ अद्य कृतैतत्तीर्थ" यह है। दक्षिणा पाने पर ब्राह्मणों को "स्वस्ति" का उच्चारण करना चाहिए ॥ २६ ॥ तदनन्तर " नमोवः ॥ या "ततोऽभिगम्यताम्"

इस मंत्र से पितरों का विसर्जन करे। पिंडों को सूँघ कर उठावे और ब्राह्मण को दे डाले या गऊ को खिला दे अथवा जल में फेंक दे। पिण्ड के अतिरिक्त उस स्थान की सब चीजें (दोना कुशा आदि) जल में डाल दे ॥ २७ ॥ फिर "भो

विसर्जनम् । पिंडानाघ्रायोत्थाप्य ब्राह्मणाय जले गवावाद्-द्यात् शेषं जले निक्षिपेत्कुशादि ॥ २७ ॥ भोमातः सुरभी देवि नित्यंविष्णुपदे स्थिता । गोग्रासं च मया दत्तं त्वं गृहाणानुकंपया १ इति गोग्रासं० द्वौ श्वानौ श्यामशबलौवै-वस्वतकुलोद्भवौ ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ २ इति श्वानबलिः काकोसि यमदूतोसि वायसोसि महाबली । तुभ्यं बलिंप्रदास्यामि गृहाण यमकिंकर ३ इति काकबलिः

मातः सुरभी" इस मंत्र से गोग्रास देवे "द्वौ श्वानौ" इस मंत्र से श्वान बलि दे। "काकोऽसि यमदूतोऽसि" इस मंत्र से काकबलि देवे ॥ २८ ॥ "यत्फलं कपि

लादाने" इस मंत्र से ब्राह्मण का दहिना पाँव धोवे " विप्रपादोदकं पीत्वा " इस मंत्र से बायाँ पावँ धोवे ॥ २६ ॥ चन्दनं वंदते" इस मंत्र से ब्राह्मण के मस्तक में तिलक लगावे ॥ हेमाद्रि में लिखा है कि अर्घ्य, आवाहन ब्राह्मण अंगूठे का निवे-

॥ २८ ॥ यत्फलं कपिलादानं कार्तिक्यां ज्येष्ठपुष्करे । तत्फलं पांडवश्रेष्ठ विप्राणां पादशौचनात् ४ इत्यनेन दक्षिणपादप्रक्षालनम् । विप्रपादोदकं पीत्वा यावत्तिष्ठतिमेदिनी । तावत्पुष्करतीर्थेपिपिबंति पितरोजलम् ॥ ५ ॥ इत्यनेन वामपादप्रक्षालनम् ॥२६॥ चंदनं वंदते नित्यंपवित्रं पाप नाशनं। आपदा हरते नित्यं लक्ष्मी वसतुसर्वदा६ इत्यनेनतिलककरणम् । हेमाद्रौ अर्घमावाहनं चैव द्विजांगुष्ठनिवेशनम् । तृप्तिप्रश्नं च विकिरतीर्थश्राद्धेविसर्जयेत् ७ नाम्नौ करणं न च बलिवैश्वदेवता

शन, भोजन करते समय तृप्ति प्रश्न (यानी आप का पेट भर गया या नहीं आदि पूछना) और विकिरश्राद्ध ये इतने कार्य तीर्थश्राद्ध में वर्जित हैं ॥ ७ ॥ अग्नि पर

हवि आदि बनाना और बलि वैश्वदेव भी करने की आवश्यता नहीं है। पद्म-पुराण में लिखा है कि पक्वान्न से, आमान्न (आँटे आदि) या कन्दमूल, फल से तीर्थ श्राद्ध करना चाहिए॥

पाद्मे० तीर्थश्राद्धंप्रकुर्वीत पक्वान्नेन विशेषतः। आमान्नेन हिरण्येन कंदमूलफलैरपि॥ ८॥ इति तीर्थ श्राद्ध विधिः समाप्तः॥

इति श्री साहित्यशास्त्री-पं०रामतेज पाण्डेयकृत भाषाटीका सहिता श्राद्ध विधिः समाप्ता॥

बा. कं. शास्त्री द्वारा ज्योतिषप्रकाश प्रेस, विश्वेश्वरगंज बनारस सिटी में मुद्रित।

* इति *

तीर्थश्राद्ध-भाषा टीका

॥ समाप्तम् ॥